क्लियोपेट्रा
और प्राचीन मिस्र

क्लियोपेट्रा

और प्राचीन मिस्र

पांच हजार साल पहले, पाषाण युग के लोग ब्रिटेन में रह रहे थे. वे लोग गुफाओं में रहते थे और जानवरों की खाल से बने कपड़े पहनते थे. वे धारदार पत्थरों के हथियारों से शिकार करते थे.

उसी समय दूर मिस्र में कुछ अन्य लोग महान शहरों में रह रहे थे, अद्भुत मंदिरों का निर्माण कर रहे थे, वे अच्छे व्यापारी थे, उनके पास घोड़ों पर सवार सैनिक, न्याय की अदालतों और वकील थे.

ये लोग मिस्र में रहते थे. हम उनके बारे में बहुत कुछ जानते हैं क्योंकि पुरातत्वविदों ने तालपत्रों पर और कब्रों की दीवारों पर, उनके जीवन और इमारतों के वर्णन और चित्र पाए हैं.

मिस्रवासियों के पास लिखने का एक बहुत ही अजीब तरीका था - चित्रलिपि (हाईरोग्लिफिक्स). वो सबकुछ चित्रों में लिखते थे, इसलिए लंबे समय तक पुरातत्वविद् इसे पढ़ने में असमर्थ रहे. फिर एक दिन एक फ्रांसीसी विद्वान को एक पत्थर मिला, जिस पर एक ही शिलालेख ग्रीक में और मिस्रवासियों की चित्रलिपि में उकेरा गया था. क्योंकि वो ग्रीक जानता था, इसलिए वो चित्र-लेखन को पढ़ने में सक्षम हुआ. इस पत्थर को "रोज़ेटा स्टोन" कहा जाता है. यह उस स्थान का नाम है जहाँ वो पत्थर पाया गया था. और यह इस शुरुआत से लोगों ने प्राचीन मिस्र के चित्र-लेखन को पढ़ना शुरू किया.
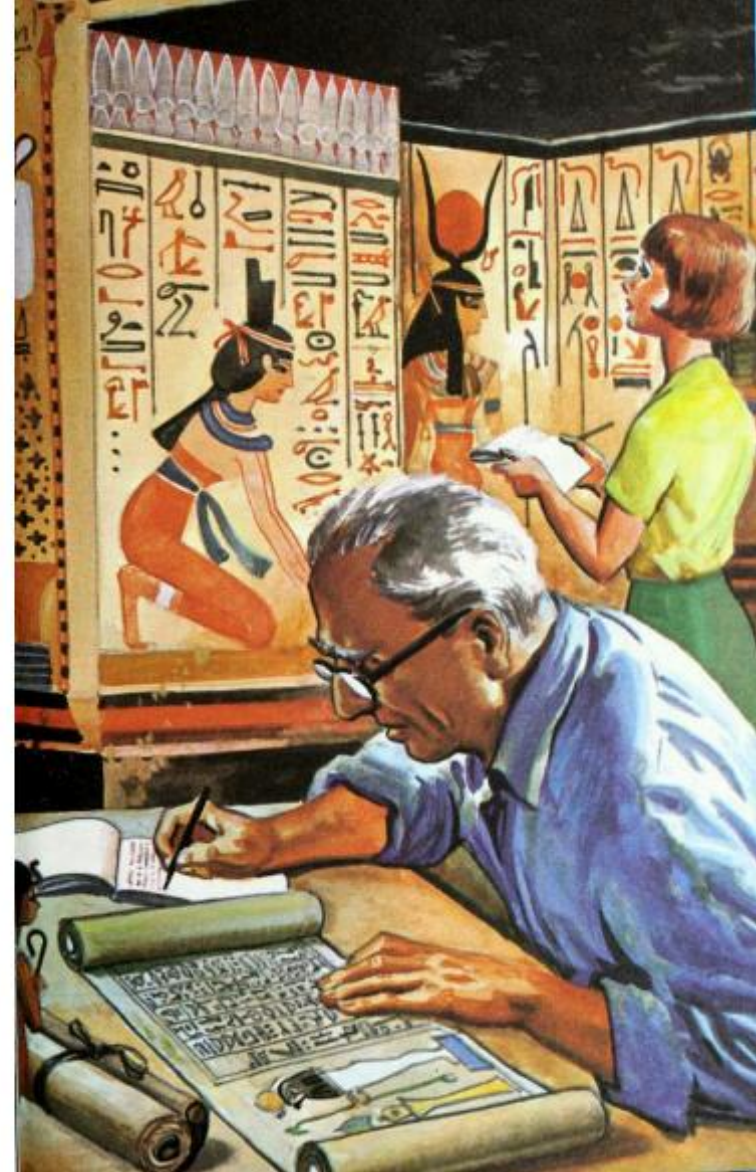
उस समय सभी लेखन पुजारियों द्वारा किया जाता था. क्योंकि तब कागज का आविष्कार नहीं हुआ था, इसलिए वे लोग पपायरस नामक पौधे के तनों का उपयोग करते थे. “पपायरस” शब्द से ही आज हमें 'पेपर' शब्द मिला है.

पौधे के तने को लम्बी पतली पट्टियों में काटा जाता था, और फिर उन्हें पास-पास रखा जाता था. अन्य स्ट्रिप्स (पट्टियों) को फिर से उन पर रखा जाता था. इस तरह ऊपर-नीचे पट्टियों से एक प्रकार की चटाई बन जाती थी. फिर उन्हें पानी में भिगोया जाता था, जिससे दोनों परतें एक-साथ चिपक जाती थीं, और फिर सपाट पत्थर पर रखकर चटाई को कूटा जाता था. अंत में, सूरज में सूखने के बाद, उसे हाथी दांत के चिकने टुकड़े से रगड़ा जाता था. फिर कागज़ उपयोग के लिए तैयार होता था.

पपायरस की इन चादरों को जोड़कर अक्सर लंबे रोल बनाए जाते थे, जिन्हें स्क्रॉल कहा जाता था. उनमें आज जैसे किताबों की तरह ज़िल्द नहीं होती थी. स्क्रॉल को दो लकड़ी के रोलर्स पर लपेटा जाता था, और पढ़ते-पढ़ते वो एक रोलर से दूसरे पर लिपटता था. किसी पुस्तक के पृष्ठों को पलटने की तुलना में यह बहुत अधिक कठिन रहा होगा.

पुजारियों लिखने के लिए घास या पुआल से बने रंगीन स्याही और पेन का इस्तेमाल करते थे. कुछ पपाइरस स्क्रॉल में बहुत खूबसूरती से खींचे गए चित्र रंगीन हैं.
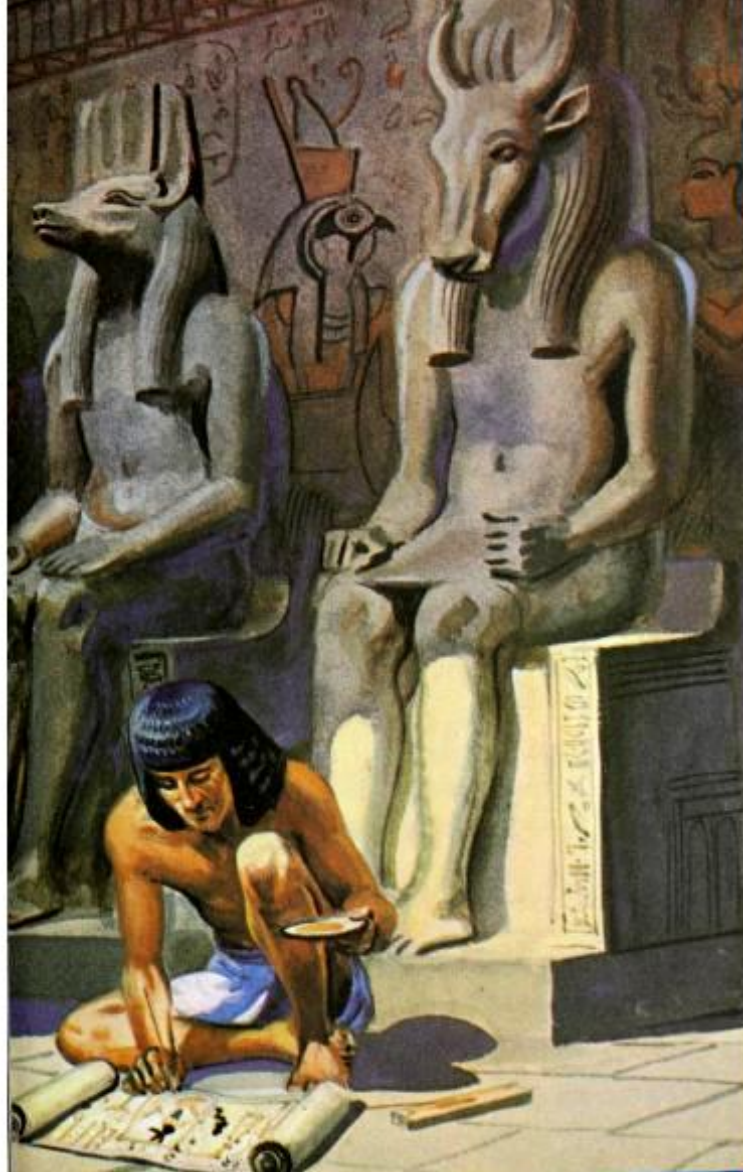
मिस्रवासी अद्भुत बिल्डर थे, और ब्रिटेन में स्टोनहेंज के निर्माण से बहुत पहले, उन्होंने अपने धर्म के कई देवताओं के लिए महान मंदिरों का निर्माण किया था. इनमें से कुछ मंदिर अभी भी मिस्र में कर्णक जैसी जगहों पर देखे जा सकते हैं, जहाँ महान "हॉल ऑफ़ कॉलम" उस दिन खड़ा है जहाँ इसे हजारों साल पहले बनाया गया था.

उन्होंने शासकों की मूर्तियों को भी तराशा, जिन्हें फेरो कहा जाता था. एब्स के पास एमनहोटेप नामक एक फेरो के दो महान स्मारक हैं. प्राचीन काल में, जब हर सुबह सूरज उगता था तब उनमें से एक मूर्ती में से संगीत के सुरों को सुना जा सकता था. लोगों को लगता था कि वो प्रतिमा, सूर्य को नमस्कार कर रही थी.

पूरे मिस्र में मंदिरों की दीवारों पर देवताओं की मूर्तियाँ और चित्र मिले. इनमें से कुछ देवता बहुत ही विचित्र थे. उनमें से एक पर आदमी का शरीर और बाज का सिर था. उसे पहले “रा” कहा जाता था, लेकिन बाद में उसे “अम्मोन-रा” के रूप में पूजा गया.

रा सूर्य देवता था और सबसे महत्वपूर्ण देवताओं में से एक था. मिस्त्रवासियों ने उसे रोज़, नाव में पूर्व से पश्चिम तक आकाश को पार करते हुए, नील नदी के लोगों पर प्रकाश और जीवन डालते हुए दिखाया था.
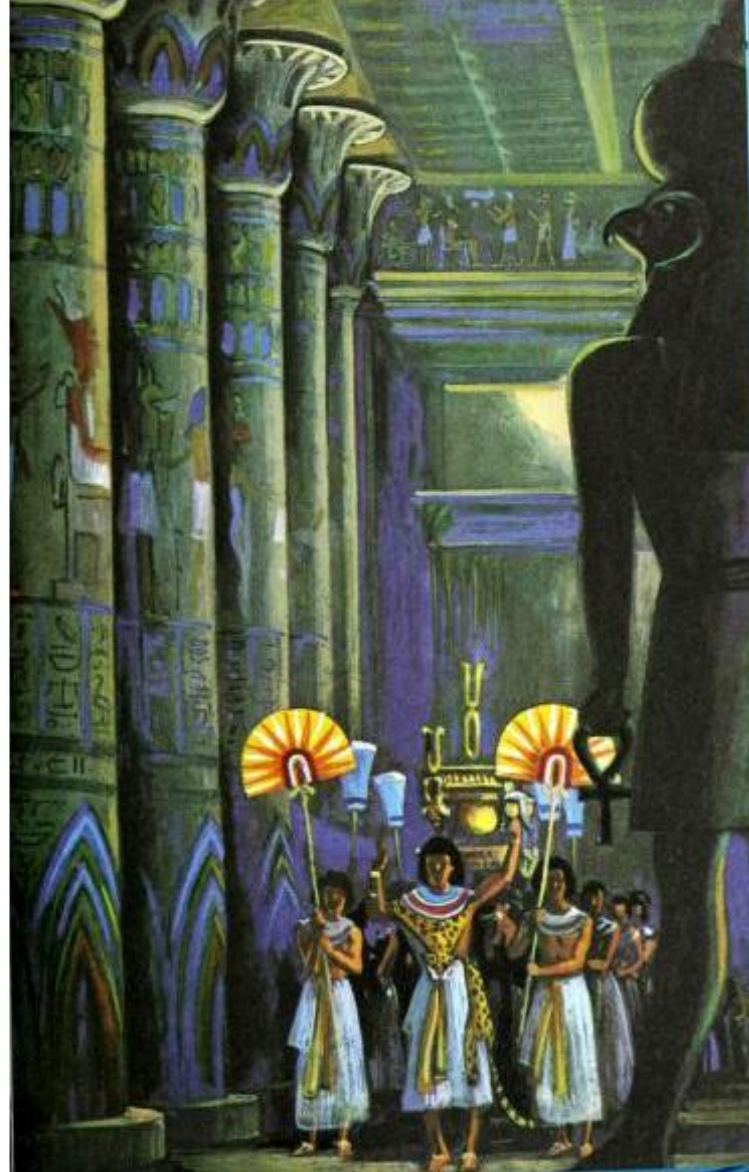
प्राचीन मिस्र के सभी स्मारकों में सबसे प्रसिद्ध ग्रेट-पिरामिड और स्फिंक्स हैं जो काहिरा (कैरो) के पास ग़िज़ा में स्थित हैं.

ग्रेट पिरामिड पत्थर के बड़े-बड़े ब्लॉकों की एक ठोस इमारत है, जो तेरह एकड़ भूमि में फ़ैली है, और वो सेंट पॉल कैथेड्रल की तुलना में एक-सौ पचास फीट ज़्यादा ऊंची है. उसका आधार वर्गाकार है. उसकी भुजाएँ इतनी सावधानी से मापी गई हैं कि वे एक-इंच लम्बाई के भीतर हैं. दीवारें ढलवां हैं और वे ऊपर की ओर एक बिंदु पर जाकर मिलती हैं.

इस पिरामिड को "चेओप्स" नामक एक फेरो ने बनवाया था. उसने लगभग पांच हजार साल पहले मिस्र पर शासन किया था. पिरामिड के अंदरूनी हिस्से में सुदूर "दफन कक्ष" है, जहाँ लंबे, संकरे मार्ग से पहुंचा जा सकता है. इस महान मकबरे के निर्माण और पत्थरों की नक्काशी के लिए बीस साल तक हजारों गुलामों को लगाया गया था.

प्रसिद्ध स्फिंक्स के स्मारक में एक मानव सिर के साथ शेर का शरीर है. स्फिंक्स, ग्रेट-पिरामिड के करीब ही खड़ा है. वो 189-फीट लंबा है, और एक बड़ी चट्टान से बनाया गया है. वो शायद ग्रेट-पिरामिड के निर्माण से पहले ही वहां मौजूद था. हालांकि कुछ विशेषज्ञों के अनुसार स्फिंक्स भी ग्रेट-परामिड के समय ही बनाया गया था. स्फिंक्स इतना बड़ा है कि कभी उसके पंजे के बीच में एक मंदिर था.
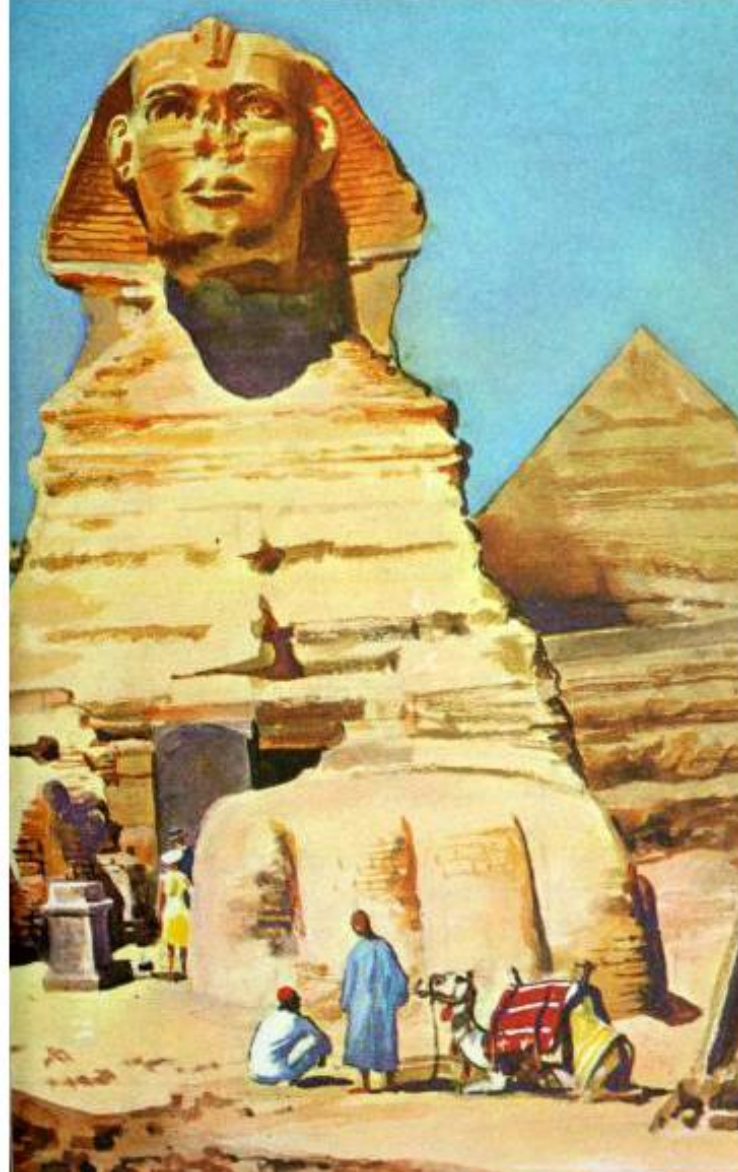
पिरामिड बड़ी चतुराई और सावधानी से बनाई गईं थीं. न केवल पत्थरों का आकार बल्कि पिरामिडों के ढाल वाले कोणों को भी राज-मिस्त्रियों ने बड़े सटीक तरीके से नापा होगा. चित्र में आप उनमें से एक को डोरी से एक पत्थर का ब्लॉक मापते हुए देख सकते हैं.

"खुफू" के पिरामिड के लिए पत्थर के ब्लॉक्स नील नदी के दूसरी तरफ से लाए गए थे, और उन्हें लाने में बहुत श्रम किया गया होगा. श्रमिकों ने उन्हें उठाने के लिए लकड़ी के लंबे लीवरों का उपयोग किया होगा और फिर उन्हें रोलर्स को नीचे रखा होगा. फिर पत्थर के ब्लॉक्स को चमड़े की रस्सियों से सैकड़ों दासों ने खींचा होगा.

ज़ुत हॉटप नामक एक स्थानीय गवर्नर के मकबरे में, इस पद्धति द्वारा ब्लॉक्स ढोने का एक चित्र है. वहां प्रतिमा पर एक आदमी खड़ा है, जो सभी गुलामों को एक-साथ खींचने का संकेत देने के लिए अपने हाथों से ताली बजा रहा है.

सभी पत्थरों को तांबे की छेनी से आकार दिया गया था. बाद में यह औज़ार कांस्य और लोहे के बने. मिस्रवासियों के पास आजकल की बड़ी क्रेन और इंजन नहीं थे. वैसे आधुनिक उपकरणों के साथ भी खुफु में पिरामिड का निर्माण एक बहुत बड़ा उपक्रम होता.

प्राचीन मिस्र के विभिन्न शासकों का सम्बन्ध अलग-अलग राजवंशों से था. राजवंशों के शासक अक्सर एक ही परिवार से आते थे. कभी-कभी किसी फेरो की कोई औलाद नहीं होती थी, और कभी-कभी किसी अन्य नस्ल का शासक मिस्र को जीतकर एक नया राजवंश शुरू करता था.

सबसे बड़े राजवंश अठारहवें और उन्नीसवें थे, जिनमें फेरो ने लगभग 1650 से 1280 ईसा पूर्व के बीच में शासन किया. लगभग चार सौ वर्षों की इस लंबी अवधि - क्वीन एलिजाबेथ प्रथम के शासनकाल से लेकर वर्तमान तक की इस अवधि को "न्यू एम्पायर" कहा जाता है. अठारहवें राजवंश के पहले फेरो के शासनकाल में मिस्र ने एक नई शुरुआत की. उसने उन विदेशियों को देश से बाहर निकाल दिया, जिन्होंने चार सौ पचास वर्षों तक देश पर शासन किया था.

इनमें से सबसे बड़ा फेरो तोथम्स तृतीय था. उसने मिस्र से सटे देशों - पश्चिम में लीबिया के रेगिस्तान और पूर्व में तिग्रिस नदी पर विजय प्राप्त की. कई दीवार पेंटिंग्स उसे रथ पर सवार, दुश्मनों को ख़त्म करके उसकी विजय को दर्शाती हैं. तोथम्स तृतीय ने ओबिलिस्क का निर्माण करवाया था. उसे गलत तरीके से "क्लियोपेट्रा की सुई" बुलाया जाता था. वो अब लंदन में एक बंदरगाह पर स्थित है.
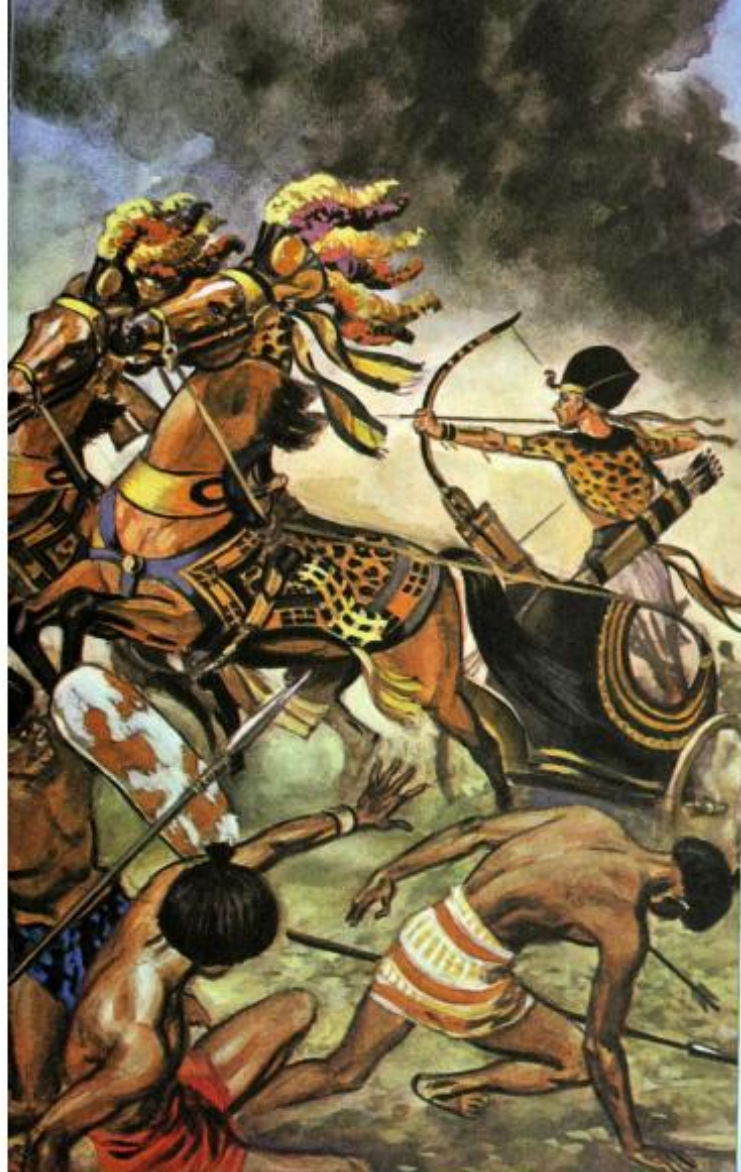
इन दोनों राजवंशों के कई फेरो महान सैनिक थे. चित्र में उनमें से एक को विजय अभियान के बाद मिस्र वापिस लौटता हुआ दिखाया गया है.

फेरो की कब्रों पर दीवारों के चित्रों में भी हम ऐसे ही विजय चित्र देख सकते हैं. उनमें विजेता, सैकड़ों कैदियों को अपने रथ के पीछे खदेड़ता है. इन कैदियों को या तो मौत के घाट उतार दिया जाएगा या फिर दास के रूप में बेच दिया जाएगा. इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनमें से कई अपने स्वामी की कब्रों और मंदिरों के निर्माण के लिए बाकी जीवन भर काम करेंगे.

उन्नीसवें राजवंश के दो महान फेरो थे. एक सेटी प्रथम था. उसने कर्णक में "हॉल ऑफ कॉलम" का निर्माण किया, और थेब्स के पास "कब्रों की घाटी" की चट्टानों में सबसे भव्य कब्रे बनवायीं.

अन्य महान फेरो, रेम्स द्वितीय ने, सत्ताईस वर्षों तक शासन किया. उसने कई उत्कृष्ट कार्यों के साथ-साथ नील नदी से लाल सागर तक नहर का निर्माण करवाया. उसी ने यूसुफ (जोसफ) का आगमन किया और उसे सम्मानित किया. उसके बेटे, मेनफेथा के शासन में यहूदियों को मिस्र से बाहर निकाला गया. इस कहानी को हम बाइबल में, उत्पत्ति और निर्गमन वाले अध्याय में पढ़ते हैं.
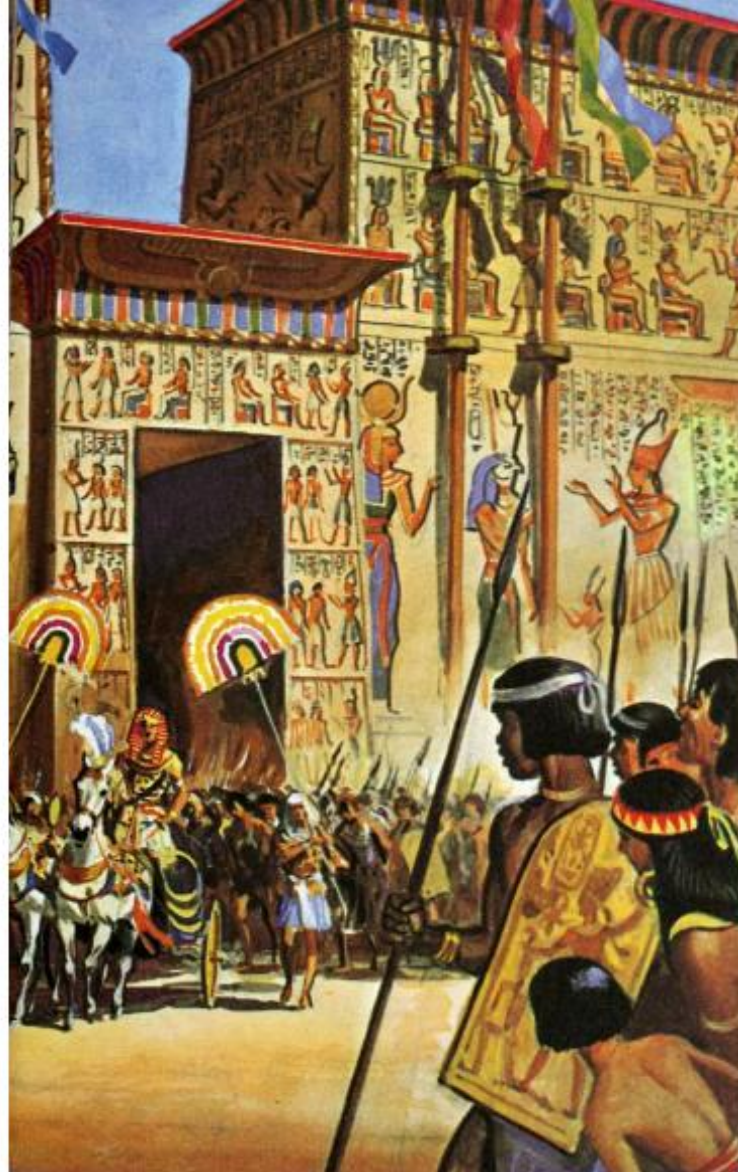
रमेस द्वितीय के काल में मिस्र एक महान और शक्तिशाली राष्ट्र था. वहां पर अफ्रीका और भूमध्य सागर के देशों का माल आता था. मकबरे के चित्रों में हम कई अजीब जानवरों के साथ हाथियों, जिराफों, तेंदुओं और बंदरों को भी देखते हैं. उन सभी को महान फेरो को श्रद्धांजलि देने के लिए लाया जा रहा था.

पूर्व से सड़क द्वारा भारत से अमीर गहने और मसाले, पर्शिया से अगरबत्ती और इत्र, और चीन से रेशम आता था. मिस्र की तिजोरी में सोना और चांदी भरा होता था. फेरो की कब्रों के चढ़ावों की समृद्धि से हमें इसका कुछ अंदाज़ चलता है कि गहने और फर्नीचर बनाने में प्राचीन मिस्र के कारीगर बेहद कुशल थे.

जब जीते गए देश, मिस्र को श्रद्धांजलि देते थे, तो उस जुलूस को सड़कों पर परेड कराया जाता था. इससे सभी लोगों को पता चलता था कि उन पर शासन करने वाला फेरो कितना महान और शक्तिशाली सम्राट था.

मिस्र में किसान वाकई में गुलाम थे. उन्हें जमीन के साथ खरीदा और बेंचा जा सकता था. और क्योंकि मिस्र में तब तक पैसे का चलन नहीं था, इसलिए गुलामों के पास कुछ भी नहीं था. उन्हें सिर्फ जिंदा रखने के थोड़ा-बहुत मिलता था, पर कुछ ज़्यादा नहीं.
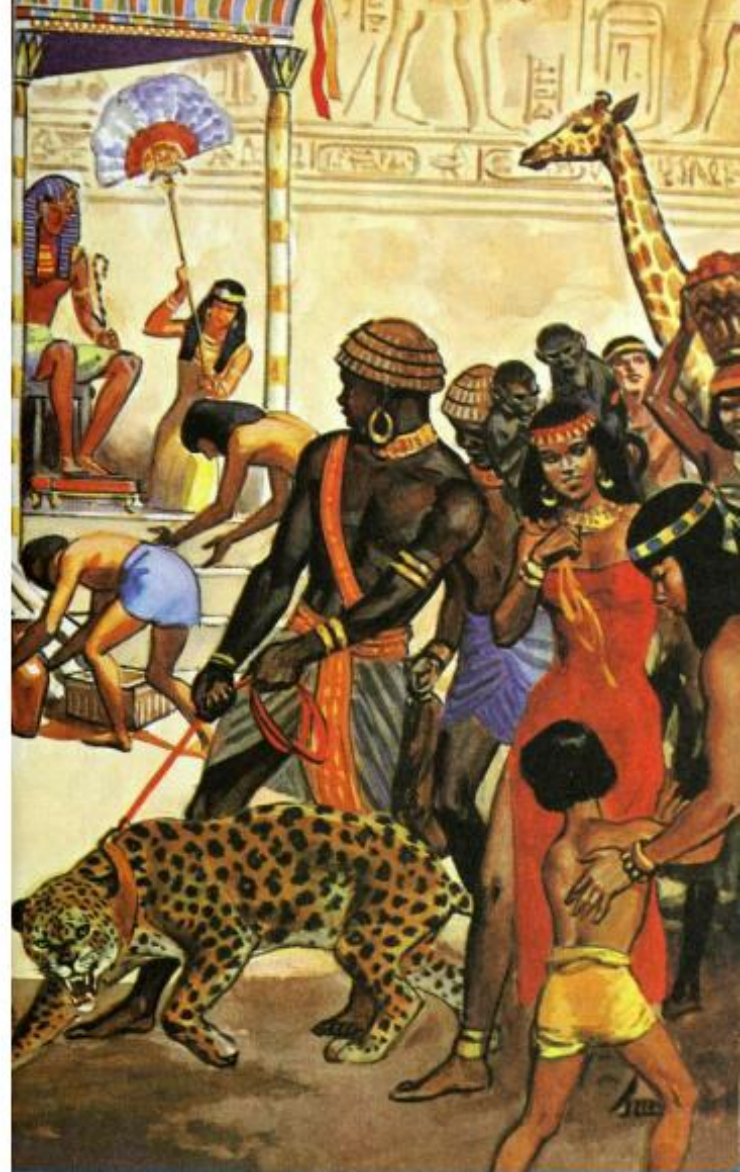
फेरो और उसकी रानी द्वारा पहने गए शानदार गहने, किसानों द्वारा पहने जाने वाले चिथड़ों से बहुत अलग होते थे. कई वॉल पेंटिंग हमें उस बात को ठीक से दिखाती हैं कि वे कैसे कपड़े पहनते थे. मिस्र की सूखी हवा में यह चीज़ें संरक्षित रहीं. हम आज सचमुच में प्राचीन मिस्र में पहने कपड़ों और गहनों को देख और छू सकते हैं.

मिस्र एक बहुत ही गर्म देश है, और वहां लोग बहुत कम कपड़े पहनते हैं. अक्सर वहां फेरो भी एक छोटा एप्रन जैसा कपड़ा ही पहनता था. वे कपड़ों की कमी को बड़े पैमाने पर गहनों - गले में हार और कंगन का श्रृंगार करके पूरा करता था.

सबसे दिलचस्प है फेरो सेरेमनी द्वारा कुछ ख़ास उत्सवों पर डबल-क्राउन मुकुट का पहनना. शुरु में ऊपरी और निचले मिस्र दो अलग-अलग देश थे, और प्रत्येक के शासक के पास एक औपचारिक पोशाक थी. जब दोनों देश एक-साथ जुड़े, तो हजारों साल पहले, दोनों मुकुटों को एक-दूसरे में जोड़ दिया गया.

ऊपरी मिस्र का मुकुट लंबा और सफेद था, जिसके शीर्ष पर एक बल्बनुमा घुंडी थी; निचले मिस्र का के मुकुट का आकार लाल और अजीब था. संयुक्त मुकुटों के आकार को आप चित्र में देख सकते हैं.
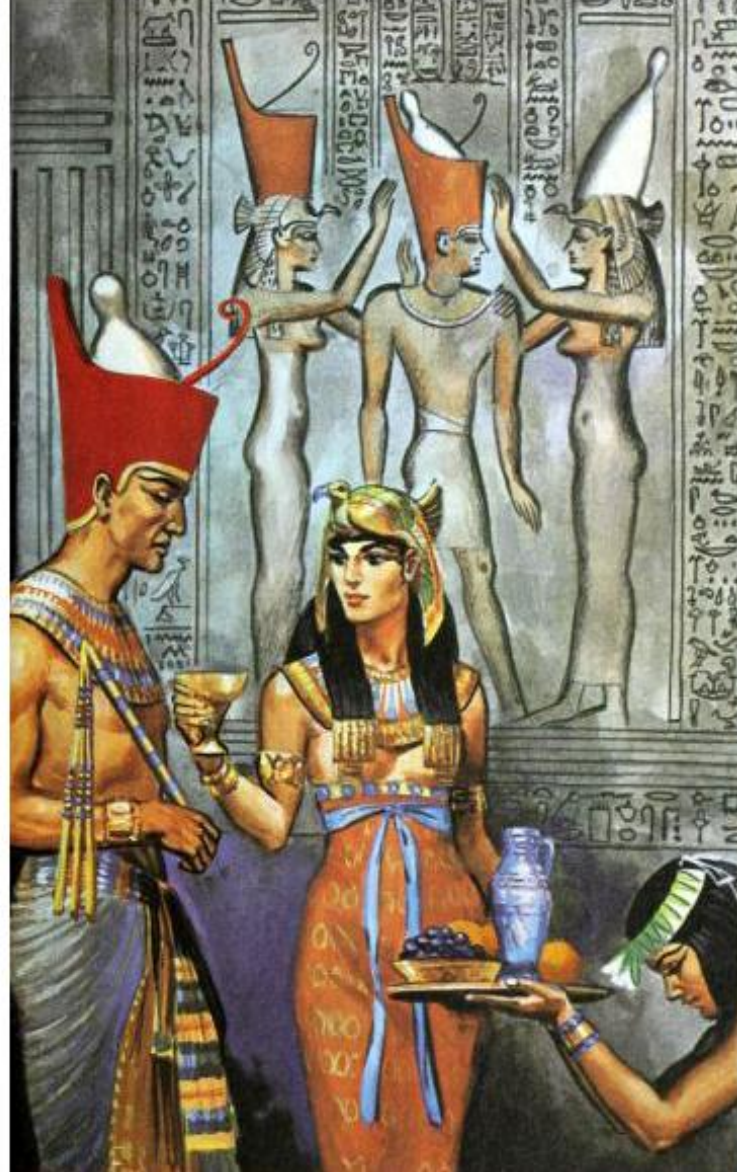
क्योंकि मिस्र एक समृद्ध देश था, इसलिए वहाँ बहुत से धनी लोग थे. क्योंकि दरबार की महिलायें और अमीर पुरुषों की पत्नियां कुछ भी काम नहीं करती थीं, इसलिए वो अपना ज्यादातर समय खुद को सुंदर दिखने में बिताती थीं.

प्राचीन मिस्र के लंबे इतिहास में फैशन में बहुत बदल आई. ड्रेसिंग-टेबल के संरक्षित गहनों से हमें पता चलता है कि मिस्र में महिलाएँ बहुत मेकअप का इस्तेमाल करती थीं. रंगों की डिब्बी, रूज के साथ, भौं पेंसिल, पाउडर बक्से और इत्र की बोतलें, खूबसूरती से सजे धातु के दर्पण और कंघी, आदि को लंदन में ब्रिटिश संग्रहालय में देखा जा सकता है.

वर्तमान में महिलायें अपने बालों को सजाने में बहुत समय बिताती हैं, मिस्र की महिलाएं भी वही करती थीं. वे अपने स्वयं के बालों को काट कर छोटा करती थीं और फिर नकली बालों की विस्तृत विग पहनती थीं, जिनका रूप और आकार समय-समय पर बदलता रहता था.

इस तस्वीर में मिस्र की एक महिला को अपनी आंखों का श्रृंगार करते हुए दिखाया गया है, जिसमें दासियां उसकी मदद कर रही हैं. वो शायद आंखों के नीचे एक हरे रंग की रेखा बना रही है जिससे उसकी पलकें और भौहें अधिक काली, बड़ी और शानदार दिखें. पास वाली मेज पर इत्र की मीठी महक वाला एक जार है.

तीन हजार साल पहले, रमेस द्‌वितीय के काल में एक शाही भोज, एक बहुत ही रंगीन अवसर रहा होगा. मिस्र के लोग बहुत सभ्य लोग थे. दीवार के चित्र हमें दिखाते हैं कि वे सबसे अच्छा व्यवहार करते थे.

शुरुआती समय में मिस्र के लोग भोजन के लिए जमीन पर बैठते थे, लेकिन उन्नीसवें राजवंश में, लगभग 1650-1400 ई.पू. के बीच वे गद्दीदार कुर्सियों पर बैठने लगे. तब छोटी मेजों को कमल के फूलों से सजाया जाता था. शराब के जगों को भी फूलों से सजाया जाता था. तब मेहमान अपने बालों में फूल पहनते थे.

हमारे पास भोज का एक ब्यौरा है. उस शाही भोज में दस अलग-अलग प्रकार के मांस, पाँच अलग-अलग पक्षी और सोलह प्रकार की रोटियां और केक थे. वहाँ फल और शराब की बहुतायत थी. सब कुछ चांदी के बर्तनों में परोसा जाता था, और छोटी रोटियां विभिन्न प्रकार की फैंसी आकृतियों में बनाई जाती थीं.

भोजन के दौरान मेहमानों का मनोरंजन संगीतकार करते थे. वे पाइप, बांसुरी, तुरही और वीणा बजाते थे. इन वाद्‌ययंत्रों में से कई को संग्रहालयों में आज भी देखा जा सकता है. हजारों साल पहले मिस्त्रवासी संगीत बजाने में दक्ष थे. संगीतकार और कभी-कभी मेहमानों के सिर पर भी मीठी-महक वाले मोम के शंकु होते थे जो पिघलकर उनके बालों पर गिरते थे.

कई मकबरों में उस काल के घरों के मिट्टी और लकड़ी के छोटे मॉडल मिलते हैं जिनमें मिस्त्रवासी रहते थे. इसलिए हम उन घरों के बारे में अच्छी तरह जानते हैं.

घर अक्सर दो मंज़िले होते थे, जिनमें बालकनियाँ होती थीं. वे चमकीले रंगों से पुते होते थे. खिड़कियों में कोई कांच नहीं होता था, क्योंकि ऊपरी मिस्र की बहुत गर्म जलवायु में खिड़कियों में से ठंडी और सुखद हवा अंदर आती थी. छतें चपटी होती थीं, जिन्हें आज भी काहिरा में देखा जा सकता है.

अमीर लोगों के घरों में मेजों और कुर्सियों को सुंदर नक्काशी से सजाया जाता था. दीवारों पर रंगीन दरियां लटकी होती थीं और फर्श पर नरम कालीन बिछे होते थे. घर के अंदर और बाहर, चटकीले चित्र बने होते थे. कई घर बगीचों से घिरे होते थे जिसमें ताड़, अंजीर के पेड़, अंगूर की बेलें और सभी प्रकार के फूलों की झाड़ियाँ उगती थीं.

पर गरीबों के घर इनसे बहुत अलग होते थे. ये आमतौर पर मिट्टी की धूप में सूखीं ईंटों से बने एक-कमरे के घर होते थे. उनमें न कोई रंग और न अमीरों के घरों जैसा कोई कोई फर्नीचर होता था. मिस्र के किसी भी गाँव में आज भी ऐसे घर देखे जा सकते हैं. फेरो के काल से उन घरों में शायद बहुत कम बदलाव आया है.
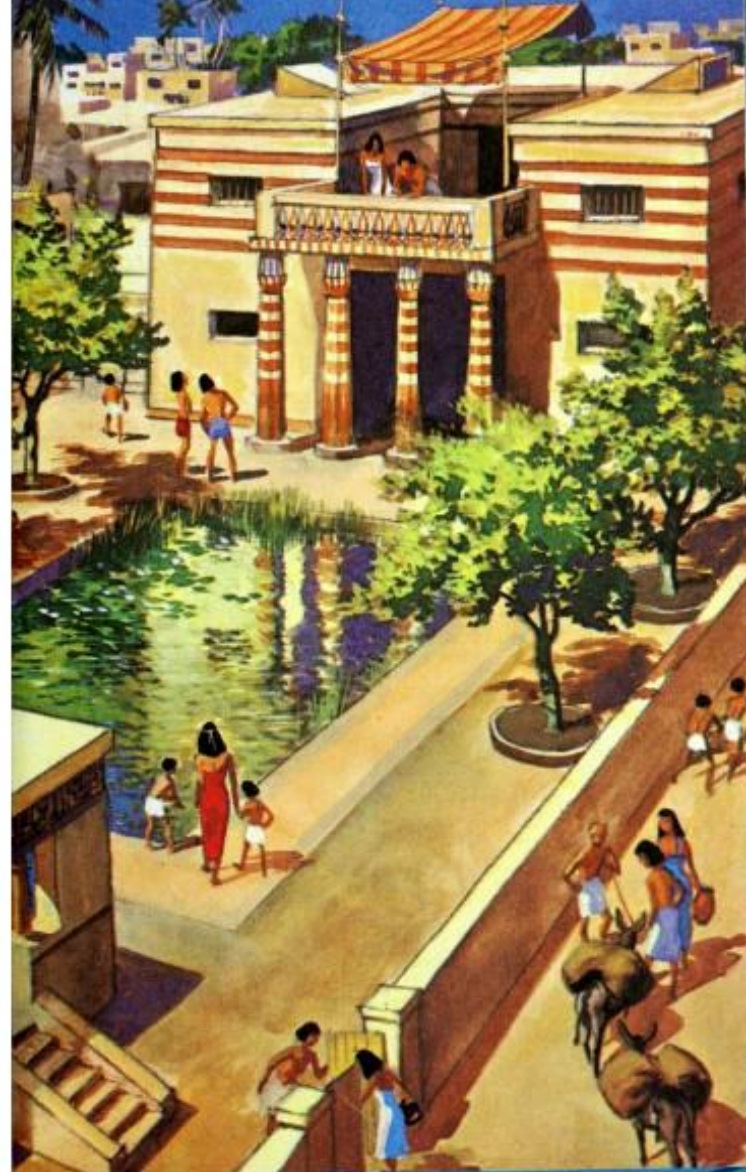
हमने देखा है कि मिस्त्रवासी पिरामिड और कब्रों और मंदिरों के महान निर्माता थे. इन विशाल भवनों को बनाने में कार्यरत हजारों लोगों के अलावा, बढ़ई, ईंट बनाने वाले मिस्त्री, चित्रकार और प्लास्टर करने वाले मिस्त्री, बागवान और सज्जाकार जैसे कारीगर भी वहां मौजूद थे.

दीवार की पेंटिंग्स और पपायरस स्क्रॉल में हमें इनमें से कई लोग काम करते हुए दिखते हैं. हम ईंट बनाने वालों को लकड़ी के सांचों में ईंटों को आकार देते हुए और उन्हें धूप में सेंकते हुए देख सकते हैं. इन ईंटों से उन्होंने कभी-कभी अस्सी फीट मोटी दीवारों का निर्माण किया था.

उस समय के बढ़ईयों के पास कई औज़ार थे, जैसे कि छेनी और आरी, जिन्हें हम आज भी इस्तेमाल करते हैं. लेकिन जहां एक आधुनिक बढ़ई जोड़ों को बनाता है, वहां पुराने ज़माने में बढ़ई कभी-कभी पेड़ को मोड़कर सही-कोण वाले लकड़ी के टुकड़े बनाते थे. यहां तक कि उन्होंने पेड़ की तीन शाखाओं को सही दिशाओं में मोड़कर उनसे तीन पैर वाले स्टूल बनाए थे.

चीनी-मिट्टी और कांच के बर्तन बनाने वाले, सोने और चांदी के कुशल कारीगरों द्वारा बनाये सुंदर नमूने दुनिया भर के संग्रहालय में देखे जा सकते हैं. रंगीन महंगे पत्थर, जैसे लाल मूंगों और अर्ध-कीमती अमेथिस्ट, को सजावट के लिए उपयोग किया जाता था.
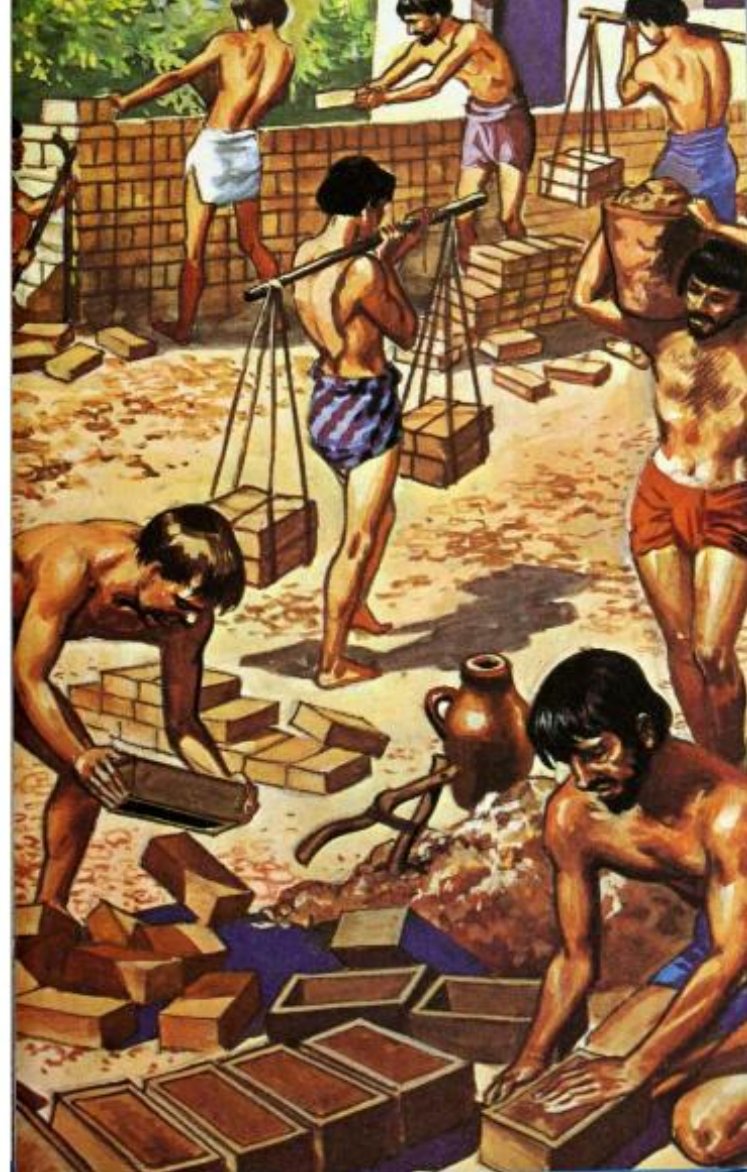
मिस्र के लोग मुख्य रूप से किसान थे, लेकिन उनकी खेती एक अजीब किस्म की खेती थी, जो आज भी मिस्र में नील नदी के किनारों पर होती है.

हमने देखा है कि मिस्र, असल में नील नदी के किनारे एक लंबी और संकरी पट्टी है, जिसके पश्चिम की ओर एक बंजर रेगिस्तान है. यदि यह नदी नहीं होती तो तो शायद मिस्र भी मौजूद नहीं होता. हर साल गर्मियों में, मध्य अफ्रीका में भारी ट्रॉपिकल बारिश के बाद, नील नदी, पानी को नीचे बहा कर लाती है. यह पानी गर्म मौसम में सूखी ज़मीन की सिंचाई के लिए एकदम ज़रूरी होता है.

कभी-कभी जब बारिश फेल होती है, तो फिर मिस्र में अकाल पड़ता था. लेकिन भारी बारिश के समय पानी को इकट्ठा करने के लिए वहां एक बहुत बड़े बांध का निर्माण किया गया, जिससे लोग अकाल के खतरे से बच पाएं.

प्राचीन मिस्र के किसानों को फसल उगाने के लिए बहुत कम श्रम करना पड़ता था. उनकी फसल नील नदी की कृपा पर निर्भर करती थी. नील नदी की बाढ़ से उनकी ज़मीन में पानी भर जाता था. फिर किसान उसमें बीज बिखेर देते थे, अक्सर बिना किसी जुताई के भी बीज बो देते थे, और सूअरों के झुंडों को जमीन को रौंदने के लिए छोड़ देते थे. इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि प्राचीन मिस्त्र के लोग नील नदी को एक देवता के रूप पूजते थे.
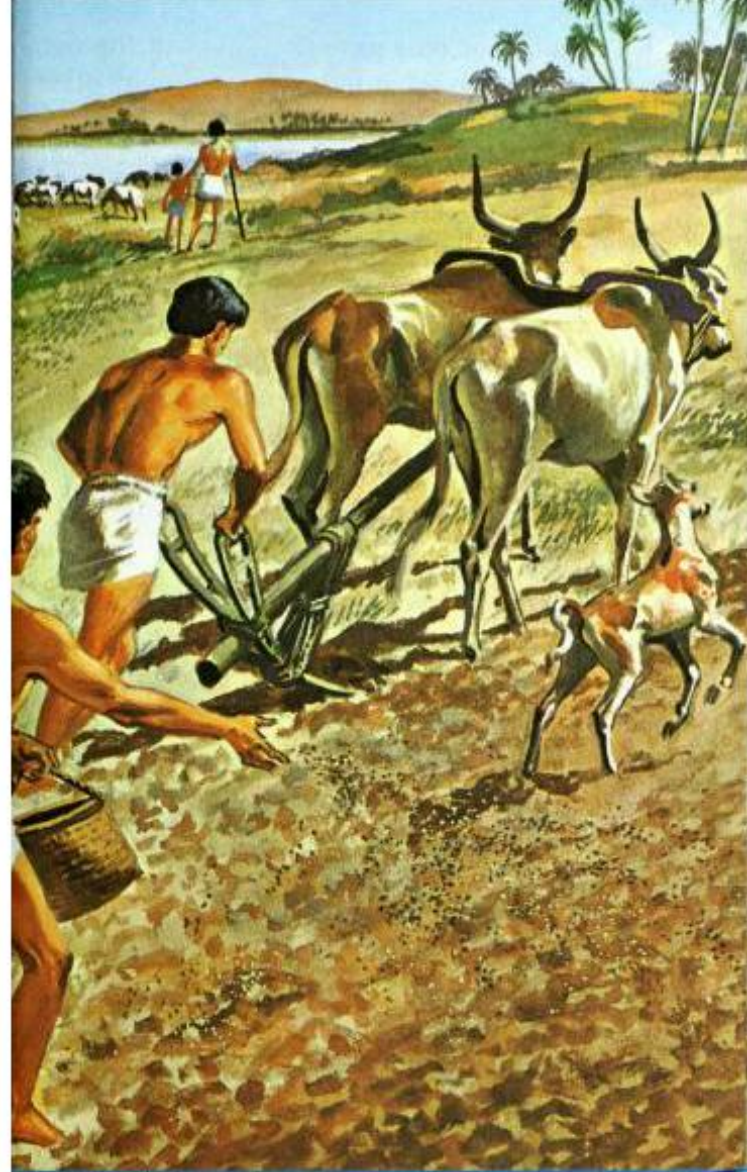
नील नदी न केवल मिस्र को समृद्ध फसल देती थी, वो अन्य कई तरीकों से भी उनकी सेवा करती थी. नील नदी द्वारा मिस्र के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में आसानी से आया-जाया जा सकता था. लोग नदी में मछली पकड़कर अपने दैनिक जीवन के भोजन का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त करते थे.

इन उद्देश्यों के लिए उन्हें नावों की आवश्यकता थी, और शुरुआती समय से मिस्र के लोगों ने पेड़ों के तनों को खोखला करके बहुत छोटी-छोटी नावें बनाईं. लेकिन रमेस के समय तक उन्होंने सीख लिया कि बड़े त्रिकोणीय पाल के साथ लकड़ी की नावों का निर्माण कैसे किया जाए. फेरो के मकबरों में इन नावों के खूबसूरती से बने मॉडल पाए गए जहाँ पर नाविक नाव का संचालन करते हुए दिखाई देते हैं.

इसी तरह की नौकाओं को आज भी नील नदी में देखा जा सकता है. धारा में नीचे जाते समय वे अपनी पाल का उपयोग करते हैं, लेकिन धार की विपरीत दिशा में नाविकों को करंट के विरुद्ध पतवारें चलानीं होती हैं.

मिस्र के लोग या तो इन नावों में या फिर किनारे से मछली पकड़ते थे. रमेस के शासन काल जैसे ही पद्धति से वहां लोग आज भी मछलियां पकड़ते हैं. एक नाव अर्ध-गोल आकार में नदी में एक लंबा, संकरा जाल बिछाती है, जिसका प्रत्येक छोर भूमि पर होता है. फिर जब दोनों छोरों से जाल खींचा जाता है, तो उसमें घुसी सभी मछलियां खिंचकर बाहर आ जाती हैं.
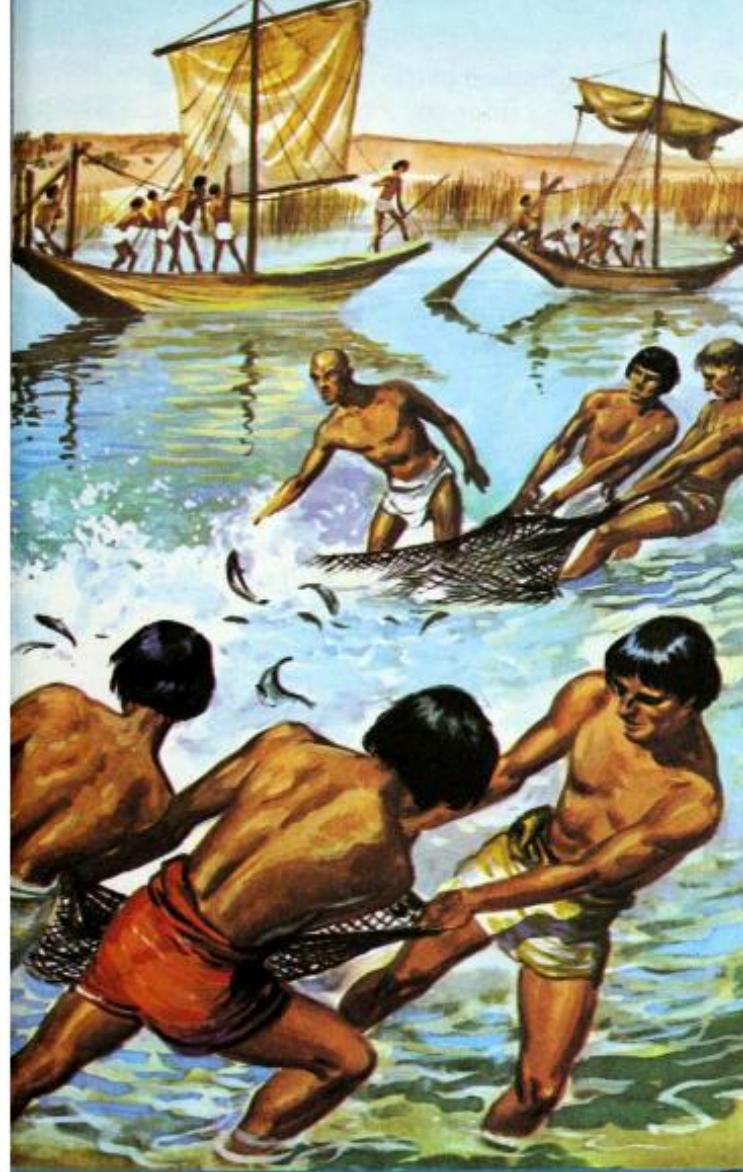
जब तक मिस्र के लोग उन्नीसवें राजवंश की उच्च सभ्यता तक पहुँचे, तब तक ऐसी कई चीजें थीं जो उन्हें अन्य देशों से आयात करनी पड़ती थीं.

सात-आठ हजार साल पहले, प्रारंभिक राजवंशों के दिनों में, मिस्र में व्यापार मुख्य रूप से नूबिया से रेगिस्तान में से होता था. मिस्र के ज्यादातर लोग ऊपरी मिस्र में रहते थे और समुद्र या उससे आगे की भूमि के बारे में वे बहुत कम जानते थे.

रमेस के समय तक ऊपरी और निचले मिस्र को जोड़ दिया गया था, और नील नदी के डेल्टा में लोग बस गए थे. वे अब भूमध्य सागर के तट पर थे, और फीनिशियन और क्रीट जाने वाले जहाजों के नाविकों से परिचित हो गए थे. तब उन्होंने खुद के जहाज बनाने का फैसला किया.

हमारे पास इन जहाजों के कई मॉडल हैं, जो अक्सर राजाओं की कब्रों में पाए जाते हैं. वे चमकीले रंग के होते हैं, धनुष के आकार के यह जहाज़ अक्सर कमल के फूल के रूप में सजे होते हैं. उनमें एक ही पाल होती थी, जो रेगिस्तान के ऊपर हलकी हवा को पकड़ने के लिए भी पर्याप्त होती थी. जब हवा नहीं होती थी तो जहाजों को दासों द्वारा पतवारों द्वारा खेया जाता था, जिनमें से नाविक कई युद्ध के कैदी होते थे. यह जहाज, नील नदी पर आने-जाने का अच्छा काम करते थे.
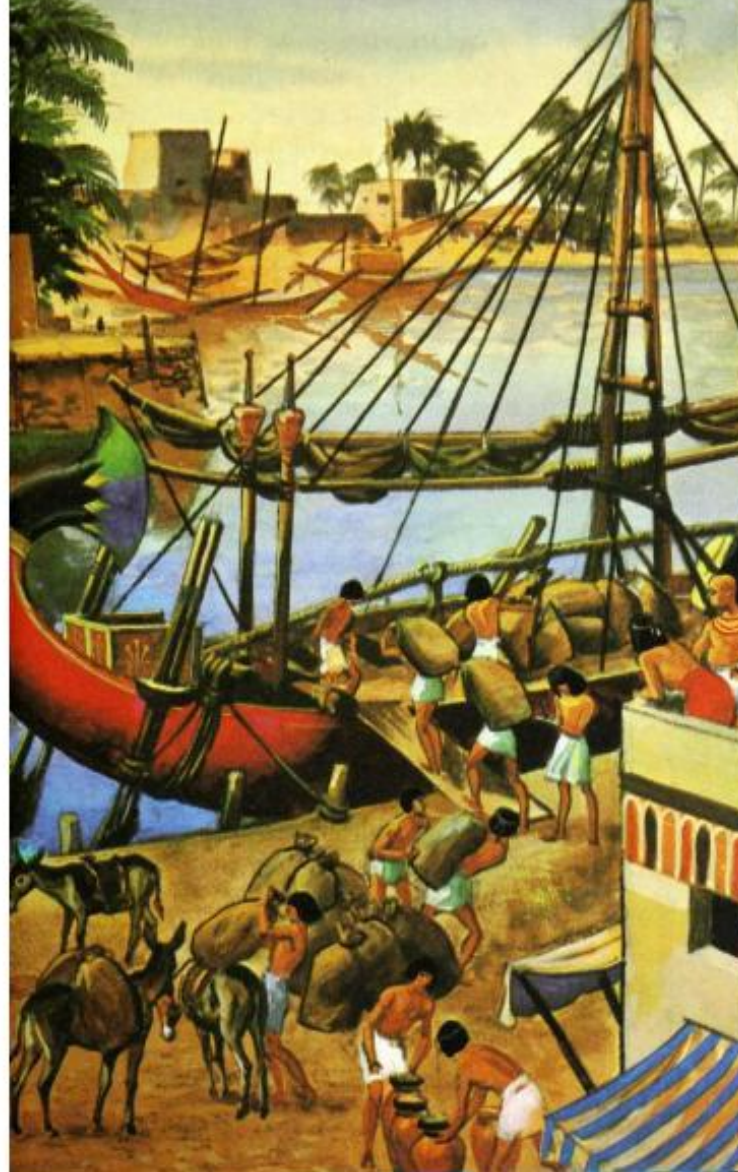
जब किसी फेरो या किसी अन्य महत्वपूर्ण अधिकारी की मृत्यु होती, तो उसके लिए कई समारोह आयोजित होते थे. शायद इस वजह से, और कब्रों पर चित्रित लोगों के दैनिक जीवन के दृश्यों के कारण ही हम उस काल के बारे में इतना जान पाए हैं.

फेरो के शरीर को लिनेन (कपड़े) के कई गज कपड़े में लपेटा जाता था और फिर लकड़ी के बक्से में रखा जाता था. इनमें से कुछ बक्सों को ब्रिटिश संग्रहालय में देखा जा सकता है. उन्हें चमकीले रंगों में चित्रित किया और चेहरे को सावधानीपूर्वक उकेरा जाता था. अक्सर उन्हें ठोस सोने की पिटी हुई पतली चादर से ढंका जाता था.

यह नक्काशीदार बक्सा फिर दूसरे बक्से के अंदर रखा जाता था और यह फिर एक तीसरे बक्से के अंदर. हर समय पुजारी पवित्र किताबों को पढ़ते थे, फेरो के शरीर को उसकी कब्र के लिए तैयार करने का समारोह सत्तर दिनों तक चलता रहता था.

अंत में बड़े बक्से को एक स्लेज पर रखा जाता था, जिसे कई गुलाम मिलकर खींचते थे. अक्सर उस बक्से को एक विशेष नाव में रखकर नील नदी के पार ले जाया जाता था. अंत में उस बक्से को पिरामिड में रखा जाता था. पिरामिड, चट्टान से उकेरी गई एक कब्र होती थी. अंत में पिरामिड के प्रवेश द्वार को सील कर दिया जाता था.
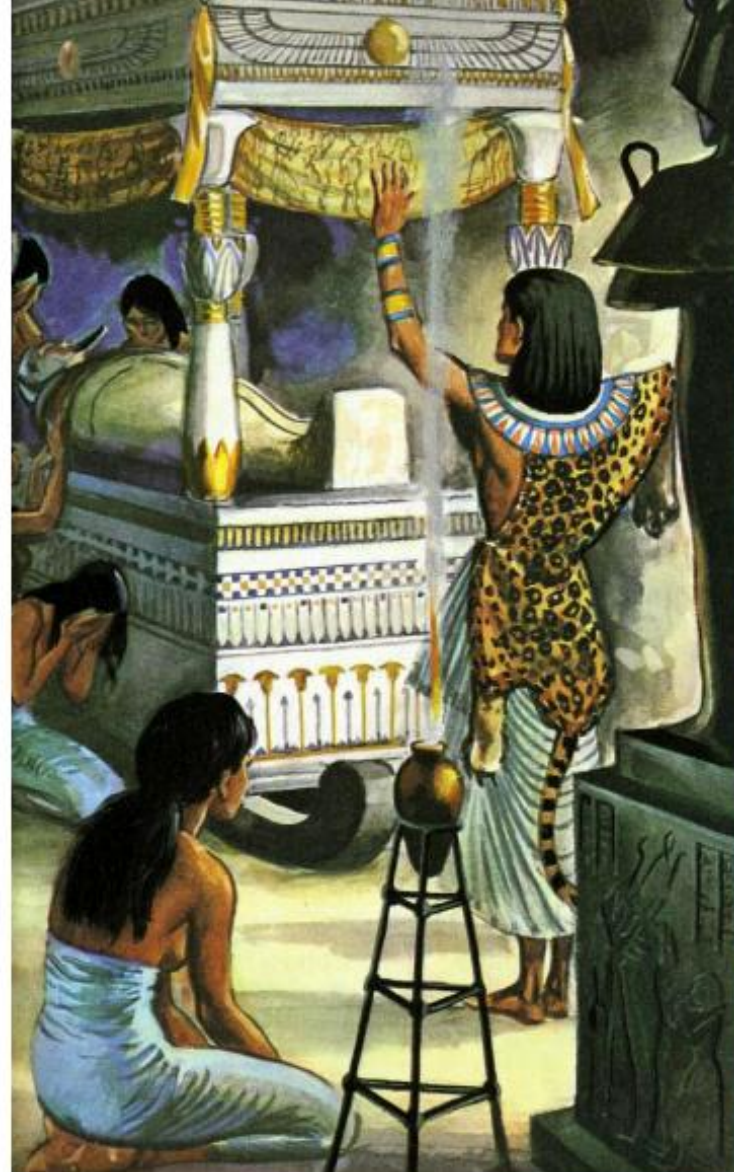
मिस्र में एक चट्टानी घाटी है, जहाँ पेड़ों या हरी घास का कोई निशान नहीं है. वहां किनारे पर खड़ी चट्टान हैं और रेतीले मैदानों में बड़े-बड़े बोल्डर हैं. असल में यह "कब्रों की घाटी" है.

चट्टानों में हर तरफ फेरो और उच्च अधिकारियों की कब्रें हैं. इन पत्थरों कारीगरों ने नक्काशीदार पत्थरों से उकेरा था. कारीगरों को केवल तेल के लैंप की रोशनी उपलब्ध थी. इसके बावजूद, कब्रों की दीवारों को बड़ी कुशलता से उकेरा और रंगा गया था.

क्योंकि अमीर लोगों की कब्रों पर महंगा चढ़ावा चढ़ता था इसलिए उन्हें अक्सर लूटा जाता था. कभी-कभी उनका निर्माण करने वाले लोग ही उन्हें लूट लेते थे. इसलिए घाटी के संकीर्ण प्रवेश द्वार की रक्षा के लिए सैनिकों को तैनात किया जाता था. लुटेरों को नाकाम करने के लिए मिस्र के लोग अक्सर फेरो के शव को एक कब्र से दूसरी कब्र में घुमाते रहते थे.

वहां ऐसा मकबरा ढूंढना बहुत दुर्लभ है जो कभी लूटा न गया हो. लेकिन 1922 में एक खोज हुई जिसमें तीन हजार साल पहले के अद्भुत खजाने अभी भी सुरक्षित रखे थे. यह युवा फेरो टूट-एख-आमेन की कब्र थी. उस कब्र पर एक अद्भुत किताब प्रकाशित हुई जिसमें वहां पाई गई सैकड़ों चीजों की तस्वीरों को शामिल किया गया है.
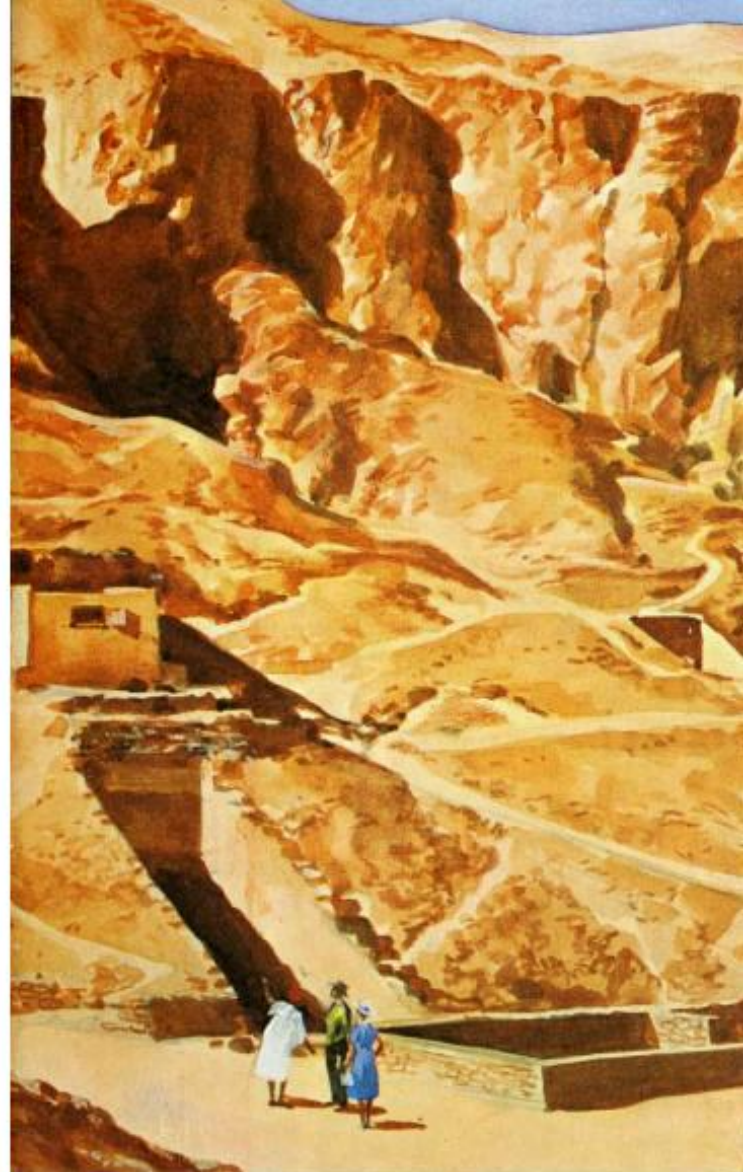
टुट-एख-आमीन का मकबरा एक दुर्घटना में अचानक मिला. यह कब्र एक अन्य फेरो की कब्र के नीचे थी. इसलिए जब ऊपर वाली कब्र लूटी गई तो उसके मलबे से नीचे वाली कब्र पूरी तरह छिप गई.

नवंबर 1922 में टुट-एख-आमेन की कब्र को खोला गया. तीन हजार दो सौ पैंसठ साल तक कोई भी व्यक्ति इस कब्र में नहीं घुसा था. उस कब्र में फेरो के साथ दफनाए लगभग सभी खजाने भी बरकरार पाए गए.

जब किसी की मृत्यु होती तो मिस्रवासी मानते थे कि वो इंसान एक दूसरी दुनिया में चला जाता था, जहां वो ठीक वैसा ही जीवन जीता था, जैसा उसने धरती पर जिया था. इसलिए उसे जिस चीज की भी जरूरत होती, उन सभी चीज़ों को उसके साथ कब्र में रख दिया जाता था. शाही फेरो की कब्र को निश्चित रूप से बहुत समृद्ध रूप से सजाया जाता था. फर्नीचर सोने और कीमती पत्थरों में जड़ा होता था. कटोरे और पीने के कप जैसी चीजें ठोस सोने की बनी होती थीं, और उन पर बहुत खूबसूरत डिजाइन बने होते थे.

टुट-एख-आमीन के मकबरे के खजाने को काहिरा के संग्रहालय में रखा गया है. मिस्र के लोग तीन हजार साल पहले कैसे रहते थे? उन्हें देखने से हमें बहुत कुछ समझ में आता है. इनमें से कुछ चीज़ों को सामने वाले चित्र में दिखाया गया है, लेकिन उनमें से सभी चीज़ों को दिखाना असंभव है. जब हम उन्हें देखते हैं, तो हमें यह भी सोचना चाहिए कि उस काल में ब्रिटेन में लोगों का जीवन स्तर कैसा रहा होगा?
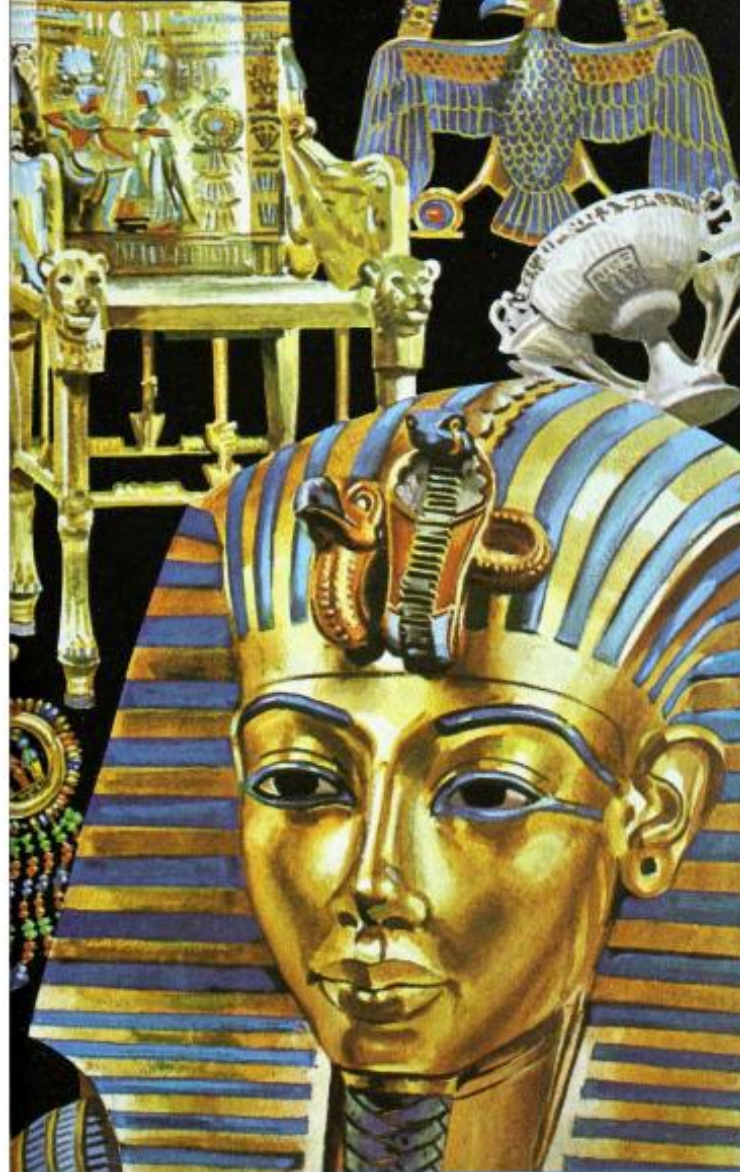
कब्रों में सजी सभी दीवार पेंटिंग्स, स्क्रॉल और फर्नीचर, बताते हैं कि प्राचीन मिस्र में बहुत कुशल कलाकार थे.

उनकी कला एक विशेष प्रकार की थी, यह बात आज हमें बहुत अजीब लगती है. क्योंकि कई चित्रों में हमें वो बहुत सजावटी नज़र आता है. उदाहरण के लिए, दासों या सैनिकों की पंक्तियों, सभी को, बिल्कुल एक-समान रूप से तैयार किया गया था, और वो अक्सर एक दूसरे के पीछे होती थीं. इसके अलावा, कई चित्र हमेशा खींचे-खिंचे होते थे, जबकि आँखें हमेशा भरी-पूरी दिखती थीं. पैर भी हमेशा साइड से दिखाए जाते थे. पैर की उंगलियों को बनाने की कठिनाई से बचने के लिए शायद ऐसा किया जाता था.

हालाँकि, जब मिस्रवासी कोई मूर्ति बनाते, या सरकोफैगस (मृत शरीर को घेरने वाले बक्से) पर कोई चेहरा उकेरते, तो वो उसे वास्तव में बहुत जीवंत बनाते थे .

सबसे सुंदर मूर्ति जो आज भी संरक्षित है, वो प्रमुख रानी नेफ़र्टिटी की है. वो एक पत्थर से बनी है और बहुत ही जीवंत-शैली में चित्रित है, यहां तक कि उसकी आंखें पूरी तरह से प्राकृतिक दिखती हैं. उसके सिर को देखकर पता चलता है कि अगर वे चाहते तो मिस्र के कलाकार प्राकृतिक रूप से चित्र बना सकते थे.
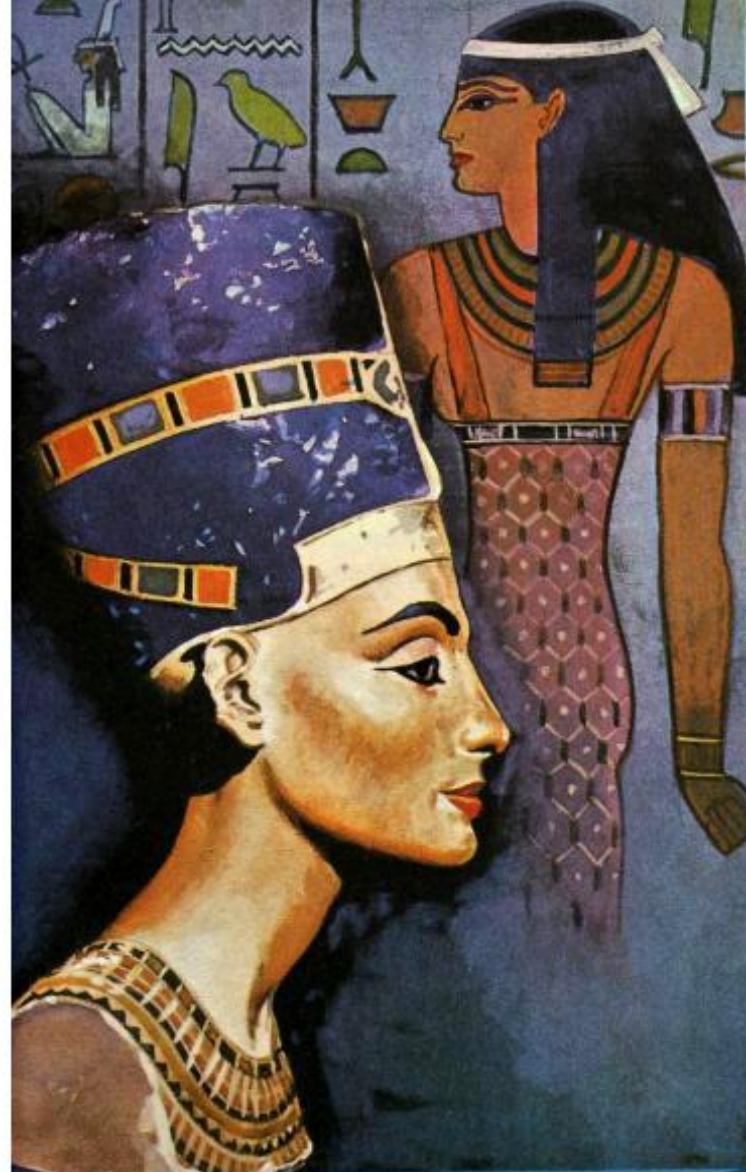
खूफ़ू की महान पिरामिड को देखकर लगता है कि मिस्र के बिल्डर्स बहुत सटीक निर्माण कार्य में सक्षम थे. ऐसा इसलिए था क्योंकि वे अंकगणित और ज्यामिति को समझते थे, हालाँकि उनके तरीके काफी प्राचीन थे. ब्रिटिश संग्रहालय में एक बहुत ही दिलचस्प स्क्रॉल है जिसमें अंकगणित में कई समस्याएं हैं. इनमें से अधिकांश समस्याएं बहुत ही व्यावहारिक हैं: किसी खेत के क्षेत्रफल को कैसे मापा जाए, या यह पता लगाना कि चित्र में मधुमक्खी के छत्ते के आकार के गोदाम में कितना अनाज समाएगा?

मिस्रवासियों ने सितारों का अध्ययन भी किया, और उन्होंने हजारों साल पहले एक कैलेंडर तैयार किया, जिस का हम आज भी उपयोग करते हैं. कुछ मायनों में उनका कैलेंडर हमारी तुलना में अधिक विवेकशील था, क्योंकि उसमें हर महीने में समान दिन होते थे.

जब मिस्रवासी बीमार पड़ते तो वे डॉक्टर को बुला सकते थे. जड़ी-बूटियों के मिश्रण के साथ देवता की प्रार्थना, उस काल के इलाज होते थे. हालांकि उनके पास सभी दवाएं नहीं थीं लेकिन वे कुशल सर्जन थे.

प्राचीन मिस्र में जीवन दुखी नहीं था. वे शतरंज और विभिन्न प्रकार के बॉल गेम्स खेलते थे. बच्चे परियों की कहानी सुनते थे, जिनमें से दो कहानियां "सिंड्रेला" और "अलीबाबा और चालीस चोर" आज भी हमारे साथ हैं.
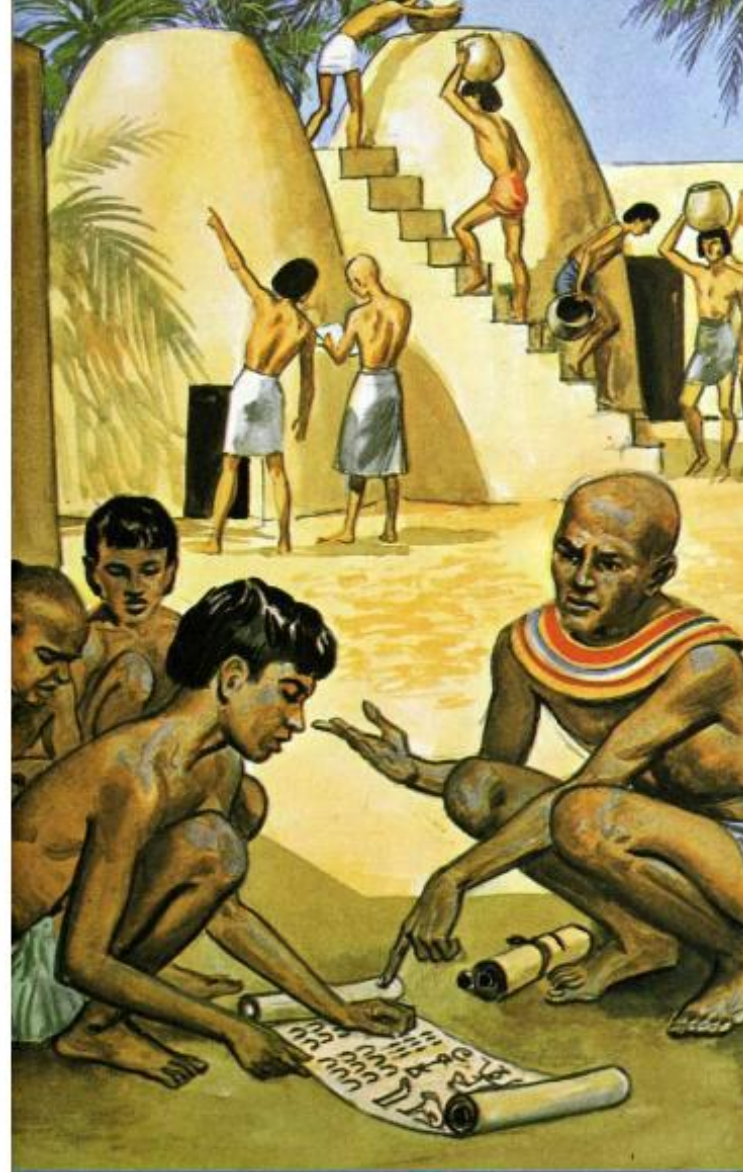
जब हम प्राचीन मिस्र की बात करते हैं, तो ज्यादातर लोग क्लियोपेट्रा के बारे में सोचते हैं. यह इसलिए है क्योंकि क्लियोपेट्रा के बारे में शेक्सपियर सहित कई अन्य लेखकों ने कहानियां और नाटक लिखे हैं.

दरअसल क्लियोपेट्रा का सम्बन्ध प्राचीन मिस्र से बिलकुल नहीं है. रमेस का काल जिसका हमने इस पुस्तक में वर्णन किया है, वो क्लियोपेट्रा के जन्म से लगभग तेरह सौ साल पहले गुज़र चुके थे - लगभग 68 ई.पू. में.

वैसे आप अलेक्जेंडर द ग्रेट के बारे में भी पढ़ सकते हैं. वह एक मैसेडोनियन था. उसने 332 ईसा पूर्व में मिस्र पर विजय प्राप्त करने के बाद, अपने एक सेनापति - टॉलेमी को, देश का शासक बनाया और एक नए राजवंश की शुरुआत की. क्लियोपेट्रा, मिस्र पर शासन करने वाली, अलेक्जेंडर द ग्रेट के वंशजों में से आखिरी थीं.

जब वो केवल सत्रह वर्ष की थी, तब क्लियोपेट्रा अपने भाई के साथ संयुक्त रूप से मिस्र की रानी बनी. लेकिन एक युवा लड़की के लिए किसी देश पर शासन करना आसान नहीं था. क्लियोपेट्रा को जल्द ही देश से बाहर निकाल दिया गया और फिर वो एक सेना जुटाने के लिए सीरिया गई. उसका उद्देश्य सिंहासन को पुनर्प्राप्त करना था, और इसमें उसकी जूलियस सीज़र ने मदद की. जूलियस सीज़र रोमन सैनिकों की एक टुकड़ी के साथ मिस्र आया था. सीज़र और क्लियोपेट्रा की बैठक ने इतिहास के पाठ्यक्रम को बदल डाला. उसके एक छोटे भाई को सिंहासन पर बिठाया गया, लेकिन उसके जहर से मरने के बाद क्लियोपेट्रा मिस्र का एकमात्र शासक बनी.
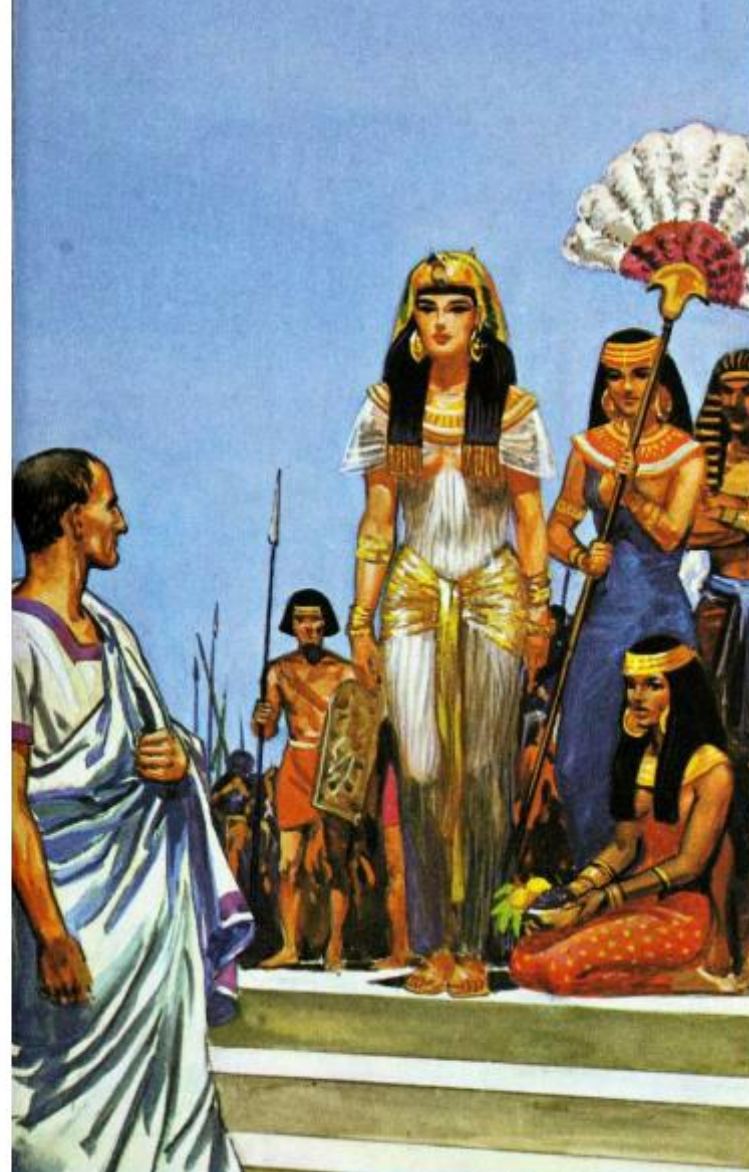
जब जूलियस सीजर की हत्या कर दी गई तब क्लियोपेट्रा रोम की यात्रा पर थी. क्योंकि वह एक विदेशी थी, इसलिए उसे रोमन लोगों ने पसंद नहीं किया. इसलिए वह मिस्र लौट आई. वहाँ वह फेरो के रूप में बड़ी शान-शौकत के साथ रही.

जूलियस सीज़र के बाद ऑक्टेवियस रोम का सम्राट बना. जब ऑक्टेवियस ने सीज़र का दोस्त मार्क एंथोनी से झगड़ा किया, तो मार्क एंथनी मिस्र चला गया. ऑक्टेवियस ने तुरंत मिस्र पर युद्ध की घोषणा की, और दुश्मन को नष्ट करने के लिए जहाजों के एक महान बेड़े के साथ वहां रवाना हुआ.

मार्क एंथनी के पास भी कई जहाज थे, और जब उसके बेड़े में मिस्र के जहाज भी जुड़ गए, तो फिर उसका पलड़ा ऑक्टेवियस से भारी हो गया. फिर मार्क एंथनी जीत के लिए आश्वस्त होकर उससे लड़ने के लिए रवाना हुआ.

मार्क एंथनी, ऑक्टेवियस की तुलना में एक बेहतर सैनिक था. अगर वो जमीन पर लड़ा होता तो शायद वो जीत जाता. इसकी बजाय, उसकी ऑक्टेवियस से मुठभेड़ ग्रीस के पश्चिमी तट से दूर समुद्र में हुई. यहां भी उसने संभवतः ऑक्टेवियस को हराया होता, लेकिन लड़ाई के बीच में क्लियोपेट्रा ने अपने जहाज़ को मिस्र लौटने का आदेश दिया. क्लियोपेट्रा के पीछे-पीछे उसके बाकी जहाज भी गए और वो लड़ाई हार गया. फिर एंथनी और क्लियोपेट्रा मिस्र लौट गए.
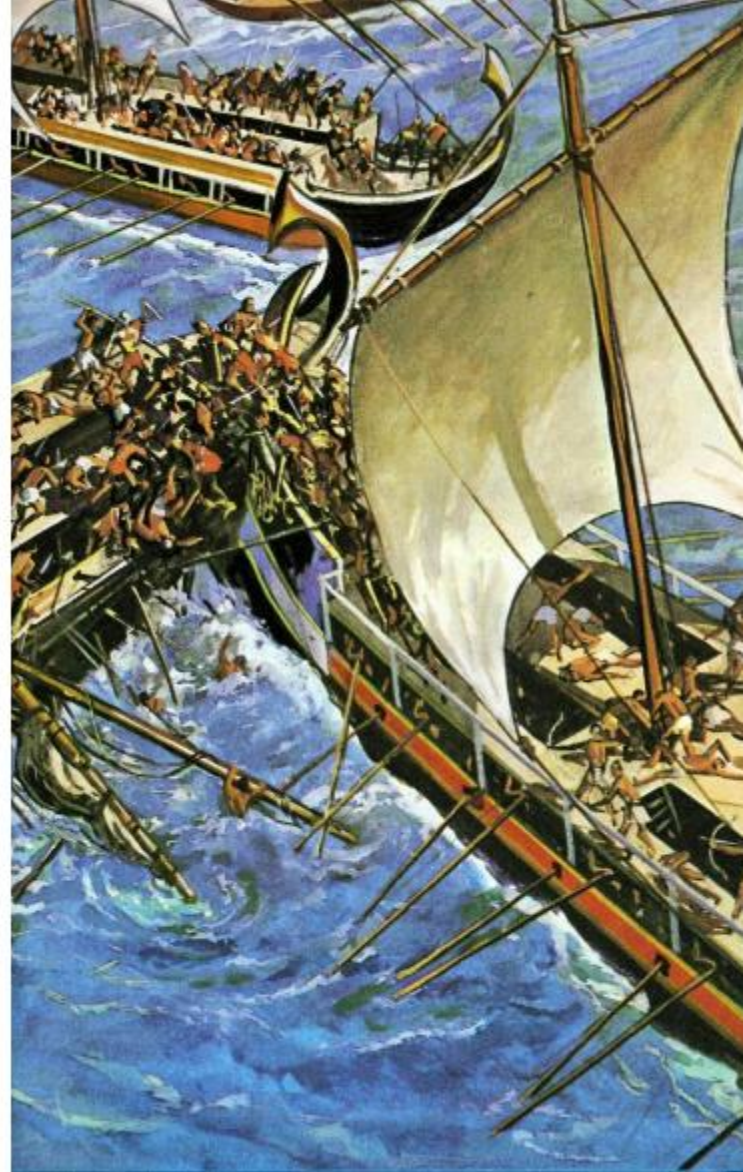
ऑक्टेवियस ने पीछा किया और एंथनी को मारकर उसने मिस्र को जीतने की ठानी. एंथनी शायद अब भी ऑक्टेवियस को हरा दिया लेकिन एंथनी की सेना ने उस पर विश्वास खो दिया था और वो मैदान छोड़कर भाग गई.

उसके बाद निराश एंथनी ने खुद को मार डाला, और ऑक्टेवियस ने अलेक्जेंड्रिया पर चढ़ाई कर दी. यहां वह क्लियोपेट्रा से मिला, जो अभी भी काफी युवा और सुंदर थी, और मिस्र की अय्याशी से घिरी थी.

क्लियोपेट्रा एक बहुत ही आकर्षक और चतुर महिला थी. उसने जूलियस सीज़र और मार्क एंथनी दोनों को अपनी ओर से लड़ने के लिए राजी किया. लेकिन वो ऑक्टेवियस को राजी नहीं कर पाई. जब क्लियोपेट्रा को लगा कि ऑक्टेवियस उसे एक कैदी के रूप में रोम ले जाएगा तब उसने खुद को मार डाला. किंवदंती यह है कि क्लियोपेट्रा ने खुद को एक जहरीले सांप द्वारा काटे जाने की अनुमति दी, जो उसके पास एक फल की टोकरी में लाया गया.

मिस्र की महान सभ्यता पाँच हज़ार वर्षों तक चली. उसके बारे में कहा जाता है कि उसने "आने वाले युगों के लिए सभ्यता की मशाल को दूर से जलाया, और फिर उसे पश्चिम के लोगों तक पहुंचाया." इसलिए आप याद रखें कि जब आप आज किसी कैलेंडर देखते हैं कि यह विचार हजारों साल पहले मिस्र के एक मुंशी के दिमाग में उपजा विचार था.

समाप्त